श्रीमद्भगवद्गीता श्रृंखला : भाग 1

श्रीमद्भगवद्गीता का संपूर्ण परिचय

इतिहास, दर्शन और 18 अध्यायों की रूपरेखा

श्रीमद्भगवद्गीता केवल सनातन संस्कृति का एक पवित्र धर्मग्रंथ नहीं है, बल्कि यह हर काल में मनुष्य के अंतर्मन में उठने वाले द्वंद्वों, संशयों और मानसिक संघर्षों का कालजयी समाधान है। जब महाबली अर्जुन कुरुक्षेत्र के मैदान में अपने कर्तव्य, धर्म और मोह के भंवर में फंसकर मानसिक रूप से टूट गए थे, तब भगवान श्रीकृष्ण ने उनके सारथि बनकर जो मार्गदर्शन प्रदान किया, वही आज विश्वभर में 'भगवद्गीता' के नाम से जाना जाता है।

> **मुख्य बिंदु:** गीता किसी सन्यासी के लिए जंगल में दिया गया उपदेश नहीं है। यह जीवन के सबसे बड़े तनाव, युद्ध और संकट के समय कर्मभूमि में दिया गया एक व्यावहारिक और मनोवैज्ञानिक संदेश है।

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: कुरुक्षेत्र का धर्मक्षेत्र बनना

गीता का प्रादुर्भाव महर्षि वेदव्यास द्वारा रचित महाकाव्य **महाभारत के 'भीष्म पर्व' (अध्याय 23 से 40)** के अंतर्गत होता है। हस्तिनापुर के सिंहासन को लेकर कौरवों और पांडवों के मध्य जब वर्षों तक चला अन्याय, अपमान और कपट किसी भी शांति प्रस्ताव से हल नहीं हुआ, तब युद्ध ही अंतिम मार्ग बचा।

कुरुक्षेत्र के मैदान में दोनों ओर से विशाल सेनाएं आमने-सामने खड़ी थीं। परंतु जैसे ही अर्जुन ने श्रीकृष्ण से प्रार्थना की कि उनके रथ को दोनों सेनाओं के मध्य में खड़ा किया जाए, उनका मन बदल गया। सामने अपने पितामह भीष्म, पूज्य गुरु द्रोणाचार्य, ताऊ-चाचा और भाइयों को देखकर अर्जुन का हृदय करुणा और शोक से भर गया। उनका गांडीव धनुष हाथ से गिर पड़ा, शरीर कांपने लगा और उन्होंने युद्ध करने से स्पष्ट इनकार कर दिया। यहीं से अर्जुन के विषाद और श्रीकृष्ण के उपदेश की नींव पड़ती है।

> **धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।**
> **मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत सञ्जय ॥1.1॥**
>
> **सरल अर्थ:** राजा धृतराष्ट्र ने पूछा — हे संजय! धर्मभूमि कुरुक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्रित हुए मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया?

इस प्रथम श्लोक में धृतराष्ट्र का प्रश्न केवल एक राजा की उत्सुकता नहीं है, बल्कि मानव मन के मोह और पक्षपात का प्रमाण है। उन्होंने "मेरे पुत्र (मामकाः)" और "पांडु के पुत्र (पाण्डवाः)" कहकर स्वयं विभाजन कर दिया। गीता सिखाती है कि यही 'मेरा-तेरा' का भाव मनुष्य के सारे दुःखों और क्लेशों का मूल कारण है।

2. गीता का संरचनात्मक ढाँचा (Structure of Gita)

श्रीमद्भगवद्गीता में कुल **18 अध्याय और 700 श्लोक** हैं। यह संपूर्ण ज्ञान चार व्यक्तियों के बीच संवाद के रूप में रचा गया है:

वक्ता (Speaker)	श्लोक संख्या	भूमिका एवं महत्व
श्रीकृष्ण (भगवान)	620	परम गुरु, मार्गदर्शक और चेतना के स्रोत
संजय	67	दिव्य दृष्टि प्राप्त, निष्पक्ष विवरण प्रस्तुतकर्ता
अर्जुन	57	जिज्ञासु शिष्य, भ्रमित सांसारिक जीव का प्रतीक
धृतराष्ट्र	1	मोह और अज्ञान से घिरे शासक (केवल पहला श्लोक)

3. 18 अध्यायों का 3 मुख्य खंडों (षट्क) में विभाजन

भारतीय वेदांत दर्शन के महावाक्य **'तत्-त्वम्-असि'** (वह ईश्वर तुम ही हो) के आधार पर गीता के 18 अध्यायों को तीन षट्कों (छह-छह अध्यायों के समूह) में विभाजित किया गया है:

क. कर्म षट्क (अध्याय 1 से 6) – 'त्वम्' (आत्मा/व्यक्ति)

यह भाग मानव जीवन के कर्म, कर्तव्य और साधना पर केंद्रित है। इसमें अर्जुन का विषाद, आत्मा की अमरता (सांख्य योग), निष्काम कर्म का सिद्धांत और ध्यान की विधियों का वर्णन है। यह बताता है कि कर्म से भागना नहीं, बल्कि फल की इच्छा छोड़कर कर्म करना ही मुक्ति का मार्ग है।

ख. भक्ति षट्क (अध्याय 7 से 12) – 'तत्' (ईश्वर/परमात्मा)

यह भाग ईश्वर के वास्तविक स्वरूप, उनकी शक्तियों और शरणागति पर आधारित है। इसमें ज्ञान-विज्ञान, अक्षर ब्रह्म, राजविद्या और अध्याय 11 में भगवान का 'विश्वरूप दर्शन' शामिल है। यह भाग सिखाता है कि प्रेम और पूर्ण समर्पण से परमात्मा को कैसे अनुभव किया जाए।

ग. ज्ञान षट्क (अध्याय 13 से 18) – 'असि' (आत्मा और परमात्मा का संबंध)

यह भाग दार्शनिक दृष्टि से सबसे गहरा है। इसमें क्षेत्र (शरीर) और क्षेत्रज्ञ (आत्मा), प्रकृति के तीन गुणों (सत्व, रज, तम), दैवी और आसुरी संपदा का अंतर और अंत में मोक्ष संन्यास योग की संपूर्ण व्याख्या की गई है।

4. संपूर्ण 18 अध्यायों की संक्षिप्त सूची

1. **अर्जुनविषादयोग:** युद्धभूमि में मोह और शोक से अर्जुन का व्याकुल होना।
2. **सांख्ययोग:** आत्मा की अमरता, कर्मयोग और स्थितप्रज्ञ पुरुष के लक्षण।
3. **कर्मयोग:** निस्वार्थ भाव से कर्तव्य करने की अनिवार्यता।
4. **ज्ञानकर्मसंन्यासयोग:** ज्ञान, यज्ञ और कर्म के रहस्य का उद्घाटन।
5. **कर्मसंन्यासयोग:** संन्यास और कर्मयोग में समन्वय।
6. **आत्मसंयमयोग (ध्यानयोग):** मन को नियंत्रित करने और ध्यान लगाने की विधि।
7. **ज्ञानविज्ञानयोग:** ईश्वर की परा और अपरा प्रकृति का ज्ञान।
8. **अक्षरब्रह्मयोग:** मृत्यु के समय स्मरण और मोक्ष का मार्ग।
9. **राजविद्याराजगुह्ययोग:** परम गोपनीय भक्ति और ईश्वर की सर्वव्यापकता।
10. **विभूतियोग:** सृष्टि की हर श्रेष्ठ वस्तु में ईश्वर के दर्शन।
11. **विश्वरूपदर्शनयोग:** भगवान के विराट रूप का दर्शन और अर्जुन का भयमुक्त होना।

12. **भक्तियोग:** साकार और निराकार उपासना तथा सच्चे भक्त के लक्षण।
13. **क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग:** शरीर और अंतरात्मा का भेद।
14. **गुणत्रयविभागयोग:** सत्व, रज और तम गुणों का विश्लेषण और उनसे परे जाना।
15. **पुरुषोत्तमयोग:** संसार रूपी उल्टे अश्वत्थ वृक्ष का रहस्य और परमात्मा का स्वरूप।
16. **दैवासुरसंपद्विभागयोग:** मनुष्य के भीतर सद्गुणों और दुर्गुणों की पहचान।
17. **श्रद्धात्रयविभागयोग:** आहार, तप, दान और श्रद्धा के तीन प्रकार।
18. **मोक्षसंन्यासयोग:** संपूर्ण गीता का सार, त्याग और शरणागति से परम शांति।

5. आधुनिक जीवन में गीता का व्यावहारिक महत्व

आज का मनुष्य किसी बाण-धनुष वाले मैदान में नहीं लड़ रहा, परंतु उसका दैनिक जीवन किसी महाभारत से कम नहीं है। मानसिक तनाव, डिप्रेशन, अनिश्चित भविष्य की चिंता और काम के दबाव में गीता आज भी सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक है:

- **Overthinking और तनाव से मुक्ति:** श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध सूत्र—'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'—सिखाता है कि हमारा अधिकार केवल अपने प्रयास पर है, परिणाम पर नहीं। परिणाम की चिंता छोड़ते ही मन शांत हो जाता है।
- **निर्णय लेने का साहस (Decision Making):** जब रिश्ते, भावनाएं और सही-गलत आपस में टकराते हैं, तब गीता हमें भावनात्मक कमजोरी से ऊपर उठकर धर्म और सत्य का चुनाव करना सिखाती है।
- **मन का नियंत्रण (Mind Mastery):** अध्याय 6 में अर्जुन कहते हैं कि मन वायु की तरह चंचल है। श्रीकृष्ण समाधान देते हैं कि अभ्यास और वैराग्य से इस मन को सबसे बड़ा मित्र बनाया जा सकता है।

6. अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न (FAQs)

प्र. क्या भगवद्गीता केवल वृद्ध या धार्मिक लोगों के लिए है?
उत्तर: बिल्कुल नहीं। गीता अर्जुन जैसे 30-40 वर्ष के युवा योद्धा को दी गई थी जो जीवन के सबसे बड़े संकट में था। यह विद्यार्थियों, पेशेवरों और नेतृत्व करने वालों के लिए एक व्यावहारिक गाइड है।

प्र. हमारी इस ब्लॉग श्रृंखला का उद्देश्य क्या है?
उत्तर: इस श्रृंखला में हम पहले अध्याय से लेकर 18वें अध्याय तक के महत्वपूर्ण श्लोकों, उनके शब्दों के अर्थ और उन्हें आज के आधुनिक जीवन में कैसे लागू करें, इसे सरल हिंदी में समझेंगे।

॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे । हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥
Website: soniapanghal.com